अष्टाङ्ग मार्गानुशीलन से नैतिक विकास

डॉ. रामहेत गौतम

सदियों से भारतीय संस्कृति नैतिक मूल्यों व गुणों से परिपूर्ण रही है। इतिहास साक्षी है कि नैतिकता पर जोर हमेशा दिया जाता है। जैसे कि भारतीय साहित्य जगत के आर्षकाव्य रामायण का मंगलाचरण नैतिक पुरुष की खोज करता हुआ मिलता है।

नैतिकता ने बुद्ध, विवेकानन्द, सरदार वल्लभ भाई पटेल और बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जैसे लोक साधकों को महान बना दिया। परन्तु आज नैतिक मूल्यों का ह्रास तेजी से जो रहा है। आधुनिक पीढ़ी पूछती है कि नैतिकता क्या है? तब यही कहा जा सकता है कि व्यक्ति के ज्ञान, विचार, कार्य, व्यवसाय और स्मृति में वह अनुशासन जो पुष्प की गन्ध, वर्ण और कोमलता में होता है, एकतारा के तन्तु आदि अवयवों में होता है, जिससे वह लोक हितैषी व लोक ग्राह्य हो जाता है।